॥ श्रीः ॥

श्री परशुराम स्तोत्रम्

(राष्ट्रभाषानुवाद सहितम्)

महामहिम-आचार्य
श्री मदमृत वाग्भव प्रणीतं

233

२६।२३।२७
१०६६ t

भगवान श्री परशुराम जी

CC-0. Sri Radha Krishna Sansthan, Delhi. Digitized by eGangotri

पुस्तक मिलने का स्थान :—

श्रीविद्या प्रकाशन

1. आर. पी. एस-286
   मदनगिर, नई दिल्ली-62
   (श्री रत्नलाल अग्रवाल)
   प्रचार-मन्त्री/कोषाध्यक्ष

•

2. **स्टाफ क्वार्टर ए-1**
   दिल्ली हाई कोर्ट, शेरशाह रोड,
   नई दिल्ली-3
   (श्री रत्नलाल अग्रवाल)

इस पुस्तक के पुनर्मुद्रण का अधिकार प्रकाशक के अधीन है ।

श्री गोपाल शर्मा सुपुत्र श्री हरवंश लाल शर्मा ने इस पुस्तक मुद्रण के व्यय का पूर्ण व्यय वहन किया है । एतदर्थ उनको अनेक धन्यवाद ।

प्रथम संस्करण
वि. सं. 2044 (1987 ई.)
700 प्रतियां

पाराशर प्रिन्टर्स
1/11849, पंचशील गार्डन
नवीन शाहदरा, दिल्ली-32
फोन : 203...

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

॥ श्री ॥

श्री परशुराम स्तोत्रम्

राष्ट्रभाषानुवाद सहितम्

महामहिम-आचार्य
श्रीमदमृतवाग्भव प्रणीतं

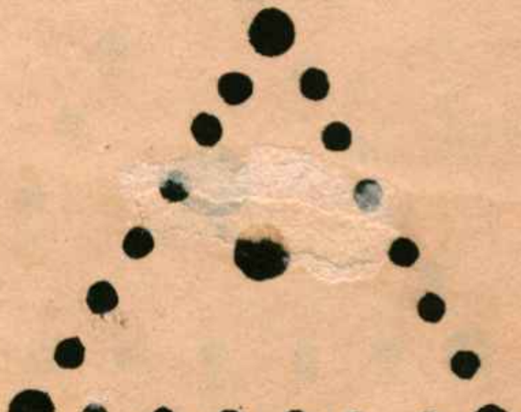

प्रकाशक :—

श्रीविद्या प्रकाशन

आर-पी. एस-286 मदनगिर,
नई दिल्ली-62

मूल्य : रु. 2.00

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

।। श्री ।।

सिद्ध महामंत्रस्वरूपिणी

।। पर शिवप्रार्थना ।।

आचार्य—श्रीमदमृतवाग्भवप्रणीता

प्रभो ! शम्भो ! दीनंविहितशरणंत्वच्चरणयो-
र्भवारण्यादस्माद्विषमविषयाशीविषवृतात् ।।
समुद्धृत्य श्रद्धाविधुरमपि बद्धादरकरं
दयादृष्ट्या पश्यन्निजतनयमात्मीकुरु शिव ! ।।

अर्थ—हे सर्वशक्तिमान् ! समस्त संसार का कल्याण करने वाले कल्याण रूप शिव भगवान् ! आपके चरणों में दीन भाव से शरण आए हुए मुझको विषय रूपी भयंकर विषधर सर्पों से भरे हुए इस संसार रूपी जंगल से बाहर निकाल कर अपनी दयादृष्टि से देखते हुए अपने पुत्र को अपना आत्मीय बनाओ । यद्यपि श्रद्धा आदि का मुझे ज्ञान नहीं है, तदपि चारों ओर से भयभीत होकर हाथ जोड़े हुए शरण में आया हूँ । अतः अपने इस दीन पुत्र को हे शिव ! अपने आप स्वीकार करो ।

(विशेष) इस मन्त्र को सुमुहूर्त में शिवालय में जा शिवपूजन करके श्री शिवजी को गुरु मान, मंत्र ग्रहण कर तीन बार वहाँ पढ़ कंठस्थ कर प्रतिदिन तीन बार सोते और जागते समय पढ़ना चाहिए ।

विनीत—
मिश्र गोविन्द शर्मा
चौबुर्जा, भरतपुर (राज०)

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

श्री गुरुदेव

अनन्त श्री विभूषित (ब्रह्मलीन)
स्वामी श्री अमृतवाग्भवाचार्य जी महाराज
(सं० १९६० से २०३६)

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

पुस

श्री

1.

2.

वि

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

आवश्यक निवेदन

ब्रह्मभावस्थ अनन्त श्री विभूषित स्वामी श्री अमृतवाग्वाचार्य जी महाराज द्वारा आषाढ़ शुक्ल दशमी, वि० सं 2039 अर्थात् 30 जून सन् 1982, अपने शुभ जन्म दिवस के अवसर पर दिल्ली में **विद्वद्वरकल श्री राधाकृष्ण धार्मिक संस्थान** की स्थापना की गई, जिसे 25 जून सन् 1986 को दिल्ली राज्य सरकार द्वारा इस शर्त पर पंजीकृत किया गया कि इसके अन्तर्गत ग्रन्थ विक्रयादि किसी प्रकार की कोई वाणिज्यक गति-विधि सम्पन्न नहीं होगी। अतएव संस्था के मूल संविधान से इस आशय के प्रावधान को हटाना पड़ा। फलत: कार्य कारिणी द्वारा विचार विमर्श के पश्चात, ग्रन्थ प्रकाशन, एवं विक्रय आदि के संचालनार्थ, '**श्रीविद्या प्रकाशन**' नाम से एक पृथक संस्था की स्थापना की गई। विद्वद्वरकल संस्था, पंजीकरण से पूर्व केवल दो प्रकाशन (1) श्री त्रिगुणेश्वर शिव स्तोत्र (मूलमात्र) एवं श्री अमृत स्तोत्र संग्रह ही निकाल पाई। इससे आगे के कार्य का दायित्व नवोदित संस्था के कन्धों पर आन पड़ा है। इस समय विद्वद्वरकाल संस्था की कार्य कारिणी उपरोक्त नवजात संस्था की भी कार्यकारिणी के रूप में कार्य कर रही है। यथा समय इसके भावी स्वरूप पर विधिवत विचार किया जायेगा। विद्वद्वरकल संस्था में जो धन राशि ग्रन्थ-चित्र प्रकाशनार्थ प्राप्त हुई थी एवं इस मद्द में जो व्यय हुआ था वह सब श्रीविद्या प्रकाशन के खाते में हस्तांतरित कर दिया गया है।

इस वर्ष अनन्त 'श्री जी' महाराज की वार्षिक पुण्य-तिथि के अवसर पर नवीन संस्था की ओर से श्री अमृत वाङ्मय परिचायिका (प्रथम

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

संस्करण) एवं श्री परशुराम स्तोत्र का यह पंचम संस्करण प्रकाशित किये जा रहे है। अनन्त श्री जी' महाराज ने जो लिखित सामग्री छोड़ी है उसका सूक्ष्म निरीक्षण एवं अध्ययन पूज्य पंडित बलजिन्नाथ एवं यहां के लोगों ने मिलकर किया हैं। परन्तु अभी यह प्रक्रिया चल रही है। ज्यों-ज्यों अन्य ग्रन्थों का किसी भी सूत्र से पता लगेगा, उन्हें भावी संकरण में सम्मिलित किया जायेगा।

यह बात सर्वविदित है कि 'आचार्य श्री' की भगवान् परशुराम जी पर विशेष श्रद्धा एवं निष्ठा थी। उनका यह विश्वास था कि वर्तमान युग में भारतीय समाज की दुर्दशा के लिये सबसे अधिक दायित्व दुष्ट-अनार्य शासकों का ही है और उनके द्वारा किये जाने वाले अन्याय के समूलोन्मूलन के लिये परशुराम जी से बढ़कर और कोई आदर्श नहीं है। भारतवर्ष में, घर-घर में सर्वान्तरात्मा, सर्वेश्वर, महामृत्युञ्जयी, ब्रह्म-क्षात्र तेज समन्वित, विश्वविजयी जामदग्नेय भगवान् श्री परशुराम की पूजा होनी अनिवार्य है। अनार्य-आततायी शाषकों के दण्डदाता उत्पीडित मानवता के त्राण-दाता, साधु-सज्जनों के मुक्ति-दाता, शास्त्र और शस्त्र विद्या के धुरन्धर विद्वान श्री-विद्या के आचार्य भगवान् श्री परशुराम जी के इस दिव्य स्तोत्र' का निर्माण अनन्त 'श्री जी' ने लगभग 55 वर्ष पूर्व सन् 1932 ई० में मार्तण्ड तीर्थ, कश्मीर में किया और विधिवत इस का पारायण भी लोगों से करवाया जिसके फलस्वरूप वहाँ पर विधर्मियों के आक्रमण का वे न केवल प्रतिकर ही कर सके अपितु उन्हें मार भगाया। अतः यह निःसन्देह कहा जा सकता है कि यह स्तोत्र स्वल्प काय होते हुई भी अत्यन्त प्रभावशाली है। विशेष रूप से मुकद्दमे आदि में तो इसके स्तवन से अमोघ फल प्राप्ति निश्चित है, ऐसा हमें प्रत्यक्ष अनुभव है।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

दुर्भाग्यवश आज भारत वर्ष में लोगों में श्री परशुराम जी के जीवन वृत्त एवं अति उदार अवतार कृत्यों के ज्ञान का सर्वथा अभाव है। लेदेकर हम लोगों की जानकारी मात्र 'राम लीला' के राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद तक ही सीमित है। श्री परशुराम पर किसी स्वतन्त्र प्रबन्धमहा काव्य का निर्मित न हो पाना भी उनसे सम्बद्ध अल्प ज्ञान का एक कारण है। यदि उन्हें भी वाल्मीकि अथवा तुलसीदास सरीखा कोई महान काव्यकार मिला होता तो आज घर-घर में श्री परशुराम जी की उपासना हो रही होती। श्री राम चरित मानस का प्रचलन एवं लोकप्रियता इतनी अधिक है कि आज वहुत कम व्यक्ति वाल्मीकीय 'रामयण' को पढ़ते हैं। संस्कृत भाषा के ज्ञान का अभाव भी इसमें एक हेतु है। अन्यथा लोगों को यह विदित हो जाता कि लक्ष्मण-परशुराम संवाद नामक कोई प्रसंग वाल्मीकीय रामायण में है ही नहीं। वहाँ राम परशुराम संवाद भीं अन्य स्थान पर, भिन्न रूप से हुआ। मिथिला से अयोध्या लौटते समय मार्ग में श्री परशुराम जी मिलते है और राम के बल पराक्रम की परीक्षा में उन्हें अपने धनुष पर बाण चढ़ाने को कहते है। फिर श्रीराम के सामर्थ्य से सन्तुष्ट हो उन्हों आशीर्वाद देकर चले जाते है। श्री राम चरित मानस में जो कुछ वर्णित है अथवा रंग मंच पर इस प्रसंग को जिस रूप में प्रस्तुत किया जाता है, वह कवियों के अपने मन की उद्भावना और कोरी नाटकीयता के आतिरिक्त और कुछ भी नहीं। उसे देखकर, श्री परशुराम जी राम द्वारा पराजित और लक्ष्मण से अपमानित हुये, ऐसा भाव बनता है। यह एक प्रकार से एक अवतारी महापुरुष का चरित्रहनन एवं उपहास है। इस प्रकार के अभिनय से कितना अनर्थ और अहित होता है इसका अनुमान भी लगाना कठिन है। इस दुष्चक्र से अवश्य श्री जी त्यन्त खिन्न

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

थे। अतः इस विषय में परशुराम भक्तों द्वारा विरोध प्रदर्शन होना ही चाहिये। इस प्रसंग को उचित परिप्रेक्ष्य में समझा जाना अत्यन्त आवश्यक है। मानस के प्रसंग में भी मंचन के समय अधिक बल राम की विनम्रता पर देना चाहिये न कि लक्ष्मण के चापल्य अथता उद्दण्डता पर। तुलसीदास जी को तो अपने इष्ट देव को किसी भी अवस्था में अन्य किसी भी व्यक्ति से श्री परशुराम तो क्या, भले ही स्वयँ भगवान शिव ही क्यों न हों, उत्कृष्टतर दिखाना था। सो उन्होंने किया। पुराणों में श्री परशुराम से सम्बद्ध जो कथायें यत्र तत्र बिखरी पड़ी है उन सबको संजो कर स्वतन्त्र ग्रन्थ लेखन द्वारा परशुराम जी के चरित्र के अन्य पक्षों को भी लोगों के सम्मुख लाना होगा।

पुणे के श्री म. स. पारखे जी ने श्री परशुराम जी पर गहन शोध करके मराठी भाषा में 'राम यशो गाथा' नामक एक विस्तृत ग्रन्थ (लगभग 800 पृष्ठ) तथा यामल ग्रन्थों से खोजकर 'परशुराम कवच' (संस्कृत) प्रकाशित किया है उन का यह कार्य अत्यन्त स्तुत्य है। कितना अच्छा हो यदि इन का हिन्दी अनुवाद करके भी कोई प्रकाशित करवा दे। इस प्रकार के पुण्य कार्य की ओर जब तक ध्यान नहीं दिया जाएगा तब तक दिग्विजयी श्री परशुराम को "मातृ हन्ता" एवं क्षत्रिय-हन्ता के रूप में ही लोग देखते रहेंगे। कितने लोगों को यह विदित है कि पितृ आज्ञा पालन के धर्म संकट में पड़कर जब श्री परशुराम ने अपनी माता का शिरोच्छेन किया तो आज्ञा पालन से प्रसन्न हुये पित द्वारा वर मांगने को कहने पर तत्काल उन्होंने माता के पुनर्जीवित होने और उसे इस घटना की स्मृति न रहने का वरदान भी प्राप्त किया। उन्हीं के परशु के प्रहार से एक बार श्री गणेश जी का एक दान्त टूटा जिससे वे

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

'एक दन्त कहलाये। पश्चिमी समुद्र को पीछे हटा कर कोंकण प्रदेश के निर्माता श्री परशुरामजी ही हैं। अग्नि पुराण में श्री राम द्वारा 'परशु-राम सहस्त्र नाम' से उन्हीं की स्तुति की गई है। भगवान् श्री कृष्ण को दुर्ग-युद्ध की विद्या सिखा कर जरासन्ध पर, जिसके आगे से कई बार वे भाग कर रण छोड़ कहलाये थे, विजय दिलवाने वाले परशुराम ही है। क्या हम जानते है कि श्री भीष्म पितामह, कर्ण एवं गुरु द्रोणाचार्य को शस्त्र विद्या प्रदान करने वाले श्री परशुराम ही थे और क्या हमें यह भी विदित हैं कि इन तीनों को परास्त करना पाण्डुओं के लिए संभव नहीं था और भगवान् कृष्ण के परामर्श से उक्त तीनों महारथियों को छल और कूट नीति का आश्रय लेकर मारा गया। ये और इसी प्रकार के अनेक रहस्य तभी उद्घाटित होंगे जब श्री राम और कृष्ण की भान्ति श्री परशुराम जी के जन्मोत्सव स्थान-स्थान पर आयोजित करके उनके विशद् अवतार कृत्यों की गाथायें गाई जायेंगी। उनके द्वारा शरीर छोड़ने का प्रसंग कभी उपस्थित नहीं हुआ, क्योंकि उन्हें चिरजीविता एवं स्वछन्द गति प्राप्त है। श्री परशुराम सत्य युग और त्रेता के सन्धि काल में अवतीर्ण, होकर श्री राम से बहुत पहले से निरन्तर विद्यमान है और आज भी महेन्द्र पर्वत पर उसी रूप में साधकों को उन के दर्शन हो सकते हैं। अतएव हमारे साथ आप सब भी प्रतिज्ञा करें कि श्री राम और कृष्ण रूपी भगवान् श्री विष्णु के अवतारों के साथ श्री परशुराम जी को भी आप अपने आराध्यदेव बना कर उनकी समुचित पूजा अर्चना करेगे और श्री परशुराम स्तोत्र का नित्य पाठ करें अपने राष्ट्र की सुव्यवस्था को सुनिश्चित बना येंगे। इति शम्।

नई दिल्ली

30 अक्टूबर, सन् 1987

विनीत

रत्न लाल अग्रवाल

एम. ए. एल. एल. बी

प्रचार मंत्री / कोषाध्यक्ष

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

प्रस्तावना

हं हो ! धर्मवीरा ! भारतीया ! विशेषतो ब्राह्मणवीराः ! सुप्रसिद्धमेव तावद्भगवदवतारभूतस्य तत्रभवतो भवतो भगवतो ब्राह्मणवीरस्य शास्त्रशस्त्रोभयसिद्धहस्तस्य शापचापोभयप्रयोग-संहारनिपुणस्य भार्गवश्रीरामवीरस्याऽवतारकृत्यम् ।

अतस्तदर्थमभिलषिततमस्वाऽभ्युदयनिःश्रेयसनिदानभूतो रामनवमीकृष्णाष्टमीवत् परशुरामतृतीयामहोत्सवोऽपि सर्वैरपि भारतीयैर्विशेषतोब्राह्मणैरवश्यं समनुष्ठेय इति जानन्त्येव तद्विद इति पुनर्निवेदनं नाऽपेक्षते विदुषां पुरः ।

तेषु तेषु महोत्सवेषु तत्तद्देवतानां स्तोत्रपाठस्ताऽत्यन्तमा-वश्यकतया रामकृष्णादीनां भगवदवताराणा स्तोत्रणा-मुपलम्भेऽपिश्री परशुरामस्तोत्राणामनुपलम्भाद् दुर्मनायमानै-र्भक्तजनैर्विज्ञापितोऽयं जनो यथामति लघुनमं सर्वजनसुपठं सुलभं च श्रीपरशुरामस्तोत्रं प्रणीय चित्रपटमपि सङ्गृह्य भारतीय-धार्मिकजनतायाः करकमलेषूपहारीकरोति ।

प्राथयते चाऽनेन प्रीयतां भगवान् भार्गवः श्रीरामवीरः सर्वा च तदाराधनप्रवणा भारतीया जनतेति शम् ।

वि. सं. १९८९ वै. शु ३ रवौ
(परशुरामजयन्त्याम्)
मार्तण्डभवनम् (काश्मीरम्)

निवेदयति भवतां धार्मिकाणां
वशम्वदः—
अ० वा० आचार्यः

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

भूमिका

ऐ धर्मवीरो ! भारतीयो ! विशेषरूप से ब्राह्मणवीरो ! भगवान् के अवतारस्वरूप अत्यन्त श्रेष्ठ ब्राह्मणवीर, शास्त्र और शस्त्र दोनों में सिद्धहस्त शाप और चाप दोनों के चढ़ाव और उतार में चतुर, भृगुगोत्रोत्पन्न भगवान् श्रीपरशुराम वीर ने अवतार लेकर पृथ्वी पर क्या किया था यह तो अत्यन्त प्रसिद्ध ही है।

इसी लिए अपनी अत्यन्त इष्ट उन्नति और सबसे बड़ी उन्नति का मूलकारण रामनवमी कृष्णाष्टमी के समान परशुराम तृतीयामहोत्सव भी सम्पूर्ण भारतीयों को और विशेषतः ब्राह्मणों को तो अवश्य ही मानना चाहिए, यह बात विद्वान् लोग जानते ही हैं—विद्वानों के आगे पुनः निवेदन की कोई आवश्यकता नहीं।

उन उन महोत्सवों में उन उन देवताओं का स्तोत्रपाठ अत्यन्त आवश्यक होता है। भगवान् के अवतार राम कृष्ण आदि के स्तोत्र मिलते भी हैं। परन्तु परशुराम के स्तोत्र दुष्प्राप्य होने से खिन्न-चित्त भक्तों की प्रार्थना से सबों को सुलभ और सुपठ छोटा-सा यह श्रीपरशुरामस्तोत्र यथामति बनाकर चित्र के साथ भारतीय धार्मिक लोगों के करकमलों में समर्पण किया जाता है।

प्रार्थना है कि भगवान् भार्गव श्रीपरशुरामजी और उनके आराधक भारतीयगण इससे सन्तुष्ट हों। इति शम् ॥

सं० १९८९ वै० शु० ३ रविवार
श्रीपरशुरामजयन्ती
मटन (कश्मीर)

निवेदक—
आप धार्मिकों का वशम्वद-
अ० वा० आचार्य

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

: श्री :

समर्पणम्

भो भो ! भारतभूमिभूषणवराः ! सद्धर्ममर्मोद्धुराः !
श्रीमद्भार्गववीरभूरिमहिमाविभ्राजकोऽयं स्तवः ।।
धर्मद्वेषणनीतिभित्तिभिदुरो भावत्कभीभेदभित्
कण्ठेऽकुण्ठमहर्निशं विलसताद्भव्याय हे भारताः !

भो ! भो ! भारत भूमि-सुभग आभूषण प्यारे ।
उद्धारक सद्धर्म भर्म बर मात दुलारे ।।
धर्मद्वेषिन नीति भीतिकों भग्न करैय्या ।
भय-भ्रम-भेक भगान अखिल भूभार हरैय्या ।।
श्रीमद्भार्गव वीर परशुधर प्रभा प्रकाशक ।
खल दुर्नीति नृशंस आततायिन को शाशक ।।
परशुरामस्तोत्र सतत मुद मंगल कारी ।
शोभित हो दिन रैन रावरे कण्ठ मंझारी ।।

ऐ ! भारतभूमि के भूषणश्रेष्ठ सद्धर्म के पोषण करने वालों में ऊँचे भारतीयो ! धर्मद्वेषियों की नीति की भीत को फोड़ने वाला, आपके डर और फूट को तोड़ने वाला, श्रीमान् भृगुकुलोत्पन्न वीर अर्थात् श्रीपरशुराम की अत्युच्च महिमा को प्रकाशित करने वाला यह स्तोत्र आपके कल्याण के लिये बे-रोक-टोक दिन-रात आपके कण्ठ मेंशोभित हो ।। १ ।।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

॥ श्रीः ॥

॥ श्रीपरशुरामस्तोत्रम् ॥

महामहिम-आचार्य-श्रीमदमृतवाग्भवप्रणीतम् ।

श्रीपरशुराममन्त्रो यथा मन्त्रमहार्णवे प्रतिपादितः—
"ॐ राँ राँ ॐ राँ राँ ॐ परशुहस्ताय नमः" इति
मूलमन्त्रः । अथपरशुरामगायत्रीमन्त्रस्तत्रैव यथा—
"ॐ जामदग्न्याय विद्महे महावीराय धीमहि । तन्नः परशुरामः प्रचोदयात्" इति । ॐ जामदग्न्याय हृदयाय नमः, ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा:, ॐ महावीराय शिखायै वषट्, ॐ धीमहि कवचाय हुं, ॐ तन्नः परशुरामो नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् । इति षडङ्गन्यासः । एवमेव करन्यासः ।
अथ ध्यानम्—

सम्पूर्णा विलसन्ति सोपनिषदो वेदोपवेदाः पुरः ।
पृष्ठे मार्गणपूर्णतूणविलसत्कोदण्डदण्डो महान् ॥
बर्हिष्टोमकण्डलू च परशुं पाण्योर्वहन् शास्त्रवित् ।
शापे शस्त्रवरे च पेशलकरः श्रीभार्गवो भ्राजते ॥१॥

सकल वेद उपवेद उपनिषद् हृदय विराजत ।
शरन भर्यो तूणीर पृष्ठ पर वर धनु राजत ॥
बांए कर कुशमुष्टि कमण्लु अति छवि छावत ।
दांए परशु प्रचण्ड सतत अरि हृदय कँपावत ॥
शाप शस्त्र दोऊन में, पारंगत सुप्रवीण हैं ।
अस श्रीभृगुकुल-कमलवर, शोभित धर्म धुरीण हैं ॥१॥

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

जिनके अग्रभाग में उपनिषदों सहित समग्र वेद और उपवेद चमकते हैं, और जिनके पृष्ठदेश पर बाणों से भरा तूणीर और विशाल धनुष सुशोभित हो रहे हैं, जिन्होंने बाएँ हाथ में कुशमुष्टि और कमण्डलु तथा दाएँ हाथ में परशु धारण किया हुआ है, शाप देना तथा शस्त्र चलाना इन दोनों कार्यों में दक्षहस्त वे भगवान् श्रीपरशुरामजी शोभा पा रहे हैं ॥१॥

मत्तक्षत्रियकृत्तकण्ठविगलद्रक्तौघसम्प्लावितं
भक्ताऽनुग्रहणं कठोरपरशुं धृत्वाऽवतीर्याऽधुना ॥
दृप्तोद्दण्डदुरीहदुष्टदमनो दीनाऽऽवलीपालको
धर्मोद्धारधुरन्धरो भृगुवरो रामः समुज्जृम्भताम् ॥२॥

मत्त क्षत्रियन कटे कण्ठ शोणितसों प्लावित ।
भक्तानुग्रहकारी परशुयुत प्रगटे बलमित ॥
दृप्तोद्दण्ड दुरीह दुष्ट दल दमन करैय्या ।
दीनोद्धारक वीर प्रवर भूभार हरैय्या ॥
धर्मोद्धार धुरन्धर भृगुकुल कमल ललाम ।
विजयी सर्वोत्कर्षसो, होंय सदा श्रीराम ॥२॥

उन्मत्त क्षत्रियों के काटे हुए गलों से बहने वाले रुधिर के प्रवाह में डुबाए हुए, भक्तों के ऊपर अनुग्रह करने में सहायक, कठोर परशु को धारण कर अब अवतीर्ण होकर, उन्मत्त उजड्ड दुष्टवासना वाले दुष्टों का दमन करने वाले, दीन लोगों की पालना करने वाले, धर्मोद्धार में धुरन्धर, भृगकुलश्रेष्ठ श्रीपरशुरामजी महाराज सर्वोत्कर्ष से विजयी हों ॥२॥

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

श्रीमद्रेणुकया धृतं स्वजठरे भूभारनाशाय यत्
श्रीमद्भार्गवजामदग्न्यमतुलं रामाभिधानं महः ।।
दृप्यत्पार्थिववृन्दकाननलज्ज्वालाढ्यवैश्वानर-
श्चन्डीप्राणपतिप्रियस्य परशोरादायि तत्संस्तुमः ।।३।।

हरन हेत भू भार रेणुका जठर धर्‌यो जिहँ ।
अभिमानी नरपाल व्यूह वन दहनक रन कहँ ।।
ज्वाल—माल संयुक्त प्रबल दावाग्नि स्वरूपहिं ।
चण्डी प्राणाधार परम प्रिय परशु लह्यो जिहिं ।।
भृगुकुल-कमल-पतंग जो श्री जमदग्नि कुमार है ।
अतुल तेज तिहिं राम की स्तुति बारम्बार है ।।३।।

श्रीमती रेणुका भगवती ने पृथ्वी का बोझ हटाने के लिए जिसको अपने गर्भ में धारण किया, अभिमानी राजाओं के झुण्डरूपी जंगलों को लीलने वाली ज्वालाओं से युक्त वैश्वानर, अर्थात् अग्निस्वरूप, चण्डी के प्राणपति अर्थात् शम्भु के प्यारे परशु को प्राप्त करने वाले, भृगुवंशोत्पन्न श्रीजमदग्निसम्भव राम नाम के उस अनुपम तेज की हम स्तुति करते हैं ।।३।।

लक्ष्मीपतेरुरसि रोषकषायिताक्षः
पादप्रहारमकरोन्मुनिपुङ्गवो यः ।।
ब्रह्मर्षिवृन्दपरिचुम्बितपादपद्मः
स श्रीभृगुर्जयति विप्रकुलप्रकाशः ।।४।।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

जो मुनि श्रेष्ठ सरोष कषायित कर युगलोचन ।
हरि हिय मारी लात कियो किंचित् हू सोच न ।।
परि चुम्बित पद पद्म जासु ब्रह्मर्षि अनेकन ।
अस श्री भृगु द्विजवंश दीप-जय व्यापित त्रिभुवन ।।४।।

जो सम्पूर्ण मुनियों में श्रेष्ठ है, जिन्होंने क्रोध से लाल आँखें बनाकर लक्ष्मी के पति अर्थात् भगवान् विष्णु के वक्षःस्थल में लात मारी थी, सहस्रों ब्रह्मर्षि जिनके चरण-कमलों को चूमते हैं, विप्रकुल में अतिप्रसिद्ध उन श्रीमान् भृगुमहर्षि का जय-जय कार हो रहा है ।।४।।

श्रीमानुदारचरितो जयतादजस्रं
ब्रह्मर्षिसोमजमदग्निरिति प्रसिद्धः ।।
दृप्यन्नृपान्तकरणं तनयं प्रसूय
येनाऽखिलं जगदिदं परितोऽभ्यरक्षि ।।५।।

जिहिं नृशंस खल नृपन निधन कारी सुत जायौ ।
कर संरक्षण अखिल विश्वको त्रास मिटायौ ।।
जय जमदग्नि उदार चरित त्रिभुवन विख्याता ।
जयति ब्रह्म ऋषि भानु मान त्रिजवंश प्रदाता ।।५।।

उन महानुभाव का सर्वदा जय-जयकार हो, जिनका चरित्र बहुत उदार है, जो ब्रह्मर्षियों में श्रेष्ठ जमदग्नि नाम से प्रसिद्ध हैं, पृथ्वी के दुष्ट अभिमानी शासकों के नाश करने वाले पुत्र को उत्पन्न करके इस सम्पूर्ण जगत् का सब ओर से जिन्होंने संरक्षण किया ।।५।।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

सम्पूर्णभूमिगतवीरमहीपना-
मन्यायमाश्रितवतां प्रमदोद्धतानम् ॥
सा कालरात्रिरिव नाशकरी समन्तात्
श्रीरेणुका भगवती विजयाय भूयात् ॥६॥

अन्यायाश्रित तथा प्रमदोद्धत नर पालन ।
कालरात्रि उन्मत्तवीर शासकन संहारन ॥
अस पूज्या भगवती रेणुका जग निस्तारनि ।
भक्तन पर है सदय शान्ति शुभशिव जयकारिन ॥६॥

अन्याय का आश्रय करने वाले अतिहर्ष अभिमान या स्त्री-सम्बन्ध से उन्मत्त सारे पृथ्वी के वीर शासकों का कालरात्रि के समान चारों ओर से संहार करने वाली वह श्रीमती रेणुका भगवती हमारे विजय के लिए हो ॥६॥

देवेन येन ततमस्ति समस्तमेत-
द्विश्वं स्वशक्तिखचितं स्वविलासरूपम् ॥
तं त्वां महर्षिगणपूजितपादपद्मं
सर्वात्मना भृगुवरं शरणं भजामः ॥७॥

आतम विलास स्वरूप समायो आतम शक्ति में ।
यह ब्रह्माण्ड समस्त व्यापलिय जिहिं स्वशक्ति में ॥
पूजत मह ऋषि व्यूह जासु पद पद्म सुखारी ।
लेंय रावरी शरण सुजन संरक्षण कारी ॥७॥

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

आत्मविलासस्वरूप आत्मशक्ति में समाया हुआ यह सम्पूर्ण विश्व जिस देव ने व्याप लिया है, कोटि-कोटि महर्षि जिनके चरण-कमलों को पूजते है, उन सज्जनों के संरक्षक भृगुकुल में श्रेष्ठ आपकी हम शरण लेते हैं ।।७।।

धर्मद्विषां नियमनाय गृहीतदीक्षं
श्रीरेणुकाभगवतीजठरात्प्रसूतम् ।।
श्रीभार्गवस्य जमदग्निमुनेः सुपुत्रं
रामं लसत्परशुपाणितलं नमामः ।।८।।

बास कियौ श्रीमती रेणुका जठर मँझारी ।
श्री भार्गव जमदग्नि तनय परशा कर धारी ।।
लीन्ही दीक्षा धर्म द्वेषियन नियमन कारी ।
प्रणवत अस श्री राम परशुयुत बारम्बारी ।।8।।

धर्मद्रोहियों का वियमन करने के लिए जिन्होंने दीक्षा ली, श्रीमती भगवती रेणुका के गर्भ से जो उत्पन्न हुए, जो श्रीभृगु-गोत्रोत्पन्न जमदग्नि महर्षि के सुपुत्र कहलाये, जिनके हाथ में परशु चमकता है, उन श्रीराम को हम प्रणाम करते हैं ।।८।।

स्फूर्जन्मदोद्धतनृपावलिकाननाऽऽली-
र्दग्ध्वा, महीसुरगणात्परिरक्ष्य बन्धून् ।।
त्रातं भुवस्तलमिदं भवता समस्तं
सम्प्राप्य खण्डपरशोः परशं प्रसन्नात् ।।९।।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

बाढ़त मद उन्मत्त व्यूह शासक वन जारी ।
संरक्षण महिसुरन कियौ बन्धुन सुखकारी ।
कर प्रसन्न भगवान् शम्भु परशा शुभ पायौ ।
कर रक्षित ब्रह्माण्ड निखिल भूभार हटायौ ॥9॥

बढ़ते हुए अभिमान से उन्मत्त शासकों के झुण्डरूपी जंगलों को जलाकर अपने भाई ब्राह्मणों का संरक्षण करके प्रसन्न खण्ड-परशु अर्थात् भगवान् शम्भु से परशु को प्राप्त कर इस सम्पूर्ण पृथ्वीतल का आपने संरक्षण किया ॥६॥

लोकत्रयाऽतुलपराक्रममजन्मभूमेः
शीर्षं निकृत्य कृतवीरसुताऽर्जुनस्य॥
त्रिःसप्तवारमकरोर्वसुधां समस्तां
निः क्षत्रियां स्वपितृतर्पणकामनायाः ॥१०॥

तिहुँलोकन में अधिष्ठान पुरुषार्थ अचल कौ ।
कार्तवीर्य शिर काट लियौ जैसे पशु बलि कौ ।
निज पितरन कौ तृप्त करन भूमण्डल सारौ ।
निःक्षत्रिय इक्कीस बार कर यश विस्तारौ ॥10॥

तीनों लोकों में अनुपम पराक्रम के एकमात्र अधिष्ठान कृत-वीर पुत्र अर्जुन (सहस्रबाहु) के सिर को काट कर अपने पितरों को तृप्त करने के निमित्त सम्पूर्ण पृथ्वी को आपने इक्कीस बार निःक्षत्रिय किया। ।१०॥

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

दुर्नीत पार्थिवकदम्बनिकृत्तशीर्ष-

ग्रावद्रवद्रुधिरसिद्धधुनीजलौघैः ।।

आकण्ठतो निजपितृन्परितर्प्य पश्चात्

प्रादाद् धरां वसुमतीं किल कश्यपाय ।।११।।

काट शीस दुर्नीत नृपाल सुगिरि बनाये ।

तिनसों प्रगटी रक्त गंगा त्रैलोक कँपाये ।

तिहिं प्रवाहसों तृप्त पितर आकण्ठ कराये ।

कश्यप ऋषिको कर प्रदान वसुधा हर्षाये ।।११।।

अन्यायी दुष्ट पृथ्वीपतियों के काटे हुए सिरों के पहाड़ों से निकलनेवाली रक्त की गंगा के जलप्रवाह से कण्ठपर्यन्त अपने पितरों को तृप्त करने के पश्चात् धन से भरी सम्पूर्ण पृथ्वी का कश्यप महर्षि को आपने दान दे दिया ।।११।।

पाणौ विलोक्य परशुं भगवंस्त्वदीये

स्त्रीवेषभाग्दशरथोऽपि पलायितोऽभूत् ।।

यः स्वासनार्धउपवेश्य पुरन्दरेण

सम्मानितोऽभवदमोघबलेन शश्वत् ।।१२।।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

जिहिं अमोघबल इन्द्र गौरवान्वित हो कीन्हों।
निज अर्धासन कर प्रदान बहु विधि सुख दीन्हों।।
लखि राउर कर परशु वही दशरथ महाराजा।
वनिता वेष बनाय छिपे भय सों तजि लाजा।।१२।।

महाराज! आपके हाथ में परशु को देखकर वे महाराज दशरथ भी स्त्रीवेष में छिपकर भाग गए थे, जिनको कि अव्यर्थ-बल इन्द्र ने अपने आधे आसन पर बिठा कर सम्मानित किया था।।१२।।

श्रीराम! भार्गव! भवच्चरणारविन्द-
मूलं शरण्यमधुना वयमागताः स्मः।।
कारुण्यपूर्णसुदृशा किल नोऽनुगृह्य
शक्तिं निजामनयनाशकरीं प्रदेहि।।१३।।

हे भार्गव! श्रीराम! भक्त संरक्षण कर्ता।
चरण शरण हम लही प्रभो! आरत दुख हर्ता।।
करुणा पूर्ण सुदृष्टि अनुग्रह कर अब कीजे।
खल दुर्नीति विनाश करी शक्ती निज दीजे।।१३।।

हे भृगुगोत्रोत्पन्न श्रीरामजी! भक्तों के संरक्षक! आपके चरणकमलों के पास हम आये हैं, अपनी दया से भरी सुन्दर दृष्टि से हमारे ऊपर अनुग्रह करके दुष्ट और दुष्टों की अनीति को नाश करनेवाली अपनी शक्ति हमें प्रदान करें।।१४।।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

वाक्चातुरी चलति नो चतुराननस्य
यच्छक्तिवर्णनविधौ खलु तत्र केयम् ।।
अस्माकमल्पविदुषां नृगिरा वराकी
शक्ता भवेत्तदपि नाथ ! वरं प्रदेहि ।।१४।।

वर्णत जाकी शक्ति चतुर चतुरानन हारे ।
तिहि किमि सकहि बखान मनुज अल्पज्ञ बिचारे ।।
ताऊ विनय कर जोर यही है नाथ हमारी ।
कीजै इष्ट प्रदान प्रभो ! दीनन दुखहारी ।।

हे नाथ ! जिसकी शक्ति के वर्णन करने में ब्रह्मा का वाक्-चातुर्य नहीं चलता, वहाँ अल्पज्ञ हमारी मनुष्यों की वाणी बिचारी किस तरह समर्थ हो, तो भी हे नाथ ! हमारा इष्ट हमें दीजिए यही प्रार्थना है ।।१४।।

वीर श्रीजामदग्न्यस्य पुण्यं स्तोत्रमिदं नराः ।।
पठन्त्यनन्यमनसो येऽर्थबोधपुरस्सरम् ।।१५।।
दुःशासनान्तकरणी भीमा धर्मप्रबोधिनी ।।
तेषां करगता शक्तिश्चकास्त्येव न संशयः ।।१६।।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

जो नर यह जमदग्नितनय स्तोत्र उदारा ।
कर अनन्य मन पढ़हिं सुनहिं कर अर्थ विचार ।।१५।।
तिनके कर दुःशासनान्तकारी भय हारी ।
धर्म प्रबोधनि शक्ति लसै निश्चय सुखकारी ।।१६।।

महर्षि जमदग्नि के वीर पुत्र भगवान् श्रीपरशुराम के इस पवित्र स्तोत्र को जो पुरुष अर्थ की ओर ध्यान देते हुए एकाग्र चित से पढ़ेंगे उनके हाथों में दुष्ट शासन का अन्त कर देने वाली, शत्रुओं के लिए भयंकर और धर्म को जगाने वाली शक्ति अवश्य दमकेगी इसमें कुछ भी सन्देह नहीं ।।१५-१६।।

अङ्काष्टनन्दपृथिवीमितवैक्रमाब्दे
वैशाखशुक्लगिरिजादिवसे ग्रहेशे ।।
मार्तण्डतीर्थभवने जमदग्निपुत्र—
स्तोत्रं व्यधायि विदुषाऽमृतवाग्भवेन ।।१७।।

शुभ संवत् निधि सिद्धि भक्ति शशि कियौ प्रकासा ।
तिथि तृतीया रवि शुक्ल पक्ष वैशाख सुमासा ।
पूज्य चरणा श्री अमृतवाग्भवाचार्य कृपाकर ।
विरच्यौ पुण्य स्तोत्र परशुवर केर सुभग वर ।।१७।।

विक्रम सम्वत् १९८९ वैशाख शुक्ल तृतीया (अक्षय्य तृतीया परशुराम जन्मदिन) रविवार के दिन श्रीमार्तण्डक्षेत्र में (मटन काश्मीर में) जमदग्नि के पुत्र श्रीपरशुराम का स्तोत्र विद्वान श्रीमदमृतवाग्भव ने बनाया ।

CC-0. Sri Radha K... Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

विक्रम संवत् नव निधि भक्ति चन्द्र सुखकार।
फागुन मास सुपूर्णिमा शुक्ल पक्ष बुधवार।।
अनुदित भाषा छन्द में कियौ स्वमति अनुसार।
श्री विश्वम्भर तनय द्विज सेवक नन्द कुमार।।
बाल सुलभ चपाल्य यह काव्य ज्ञान नहिं मोय।
विद्वज्जन कवि क्षमहि यदि भूल चूक कछु होय।।

इति श्रीसर्वतन्त्रस्वतंत्र महामहिम-आचार्य भीमदमृतवाग्भव—प्रणीतं राष्ट्रभाषाऽनुवादसहितं श्री परशुरामस्तोत्रम्।

CC-0. Sri

अनन्त 'श्री जी' का

निकट भविष्य में प्रकाशित होने वाला ग्रन्थ

श्री राष्ट्रालोक का

श्री राष्ट्र संजीवन संस्कृत भाष्य

(हिन्दी अनुवाद सहित)

राष्ट्रवादी ही आर्य है। आर्य ही शान्ति की स्थापना कर सकते हैं।

'भारत भारतीयों का है।'

स्वातंत्र्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। राष्ट्र हमारा पिता है, माता है, और आचार्य हैं। हम सदा उसके सेवक हैं। हमारा राष्ट्र हमें भोग और मोक्ष दोनों देता है।

हम सच्चे राष्ट्रिय हैं

अभारतीय भारत के अतिथि हो सकते हैं, राष्ट्रिय नहीं। हम सँक्रान्ति का सदा आदर करते हैं। हमें ऐंसी शान्ति नहीं चाहिए जो राष्ट्र को परतन्त्र बनाये।

राष्ट्रिय राष्ट्र के पुत्र होते हैं, पति नहीं। भारतीय अपने को हिन्दू मानने में गौरव का अनुभव करते हैं। भारतीय आदर्श के विपरीत क्रान्ति किंक्रान्ति है, संक्रान्ति नहीं। यदि आप इन भावों से स्नेह करते हैं तो यह ग्रन्थ अवश्य पढ़िये।

श्री राष्ट्रालोक परम पवित्र भारतीय आदर्श का [illegible]एक जीवन शास्त्र है।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

महामहिम आचार्य श्रीमद् अमृत वाग्भव जी के प्रकाशित ग्रन्थ

संख्या	ग्रन्थ		मूल्य
1.	महानुभव शक्तिस्तोत्र नवान संस्करण-2042	: संस्कृत-हिन्दी व्याख्या	8-00
2.	श्री परशुराम स्तोत्रम् (पंचम् संस्करण)	: हिन्दी गद्य-पद्यानुवाद	2-00
3.	श्री विंशतिका शास्त्रम्	: संस्कृत-हिन्दी अनुवाद	5-75
4.	श्री सप्तपदी हृदयम्	: संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेज़ी अनुवाद	1-50
5,	श्री संजीवनी दर्शनम्	: संस्कृत-हिन्दी अंग्रेज़ी अनुवाद	1-50
6.	श्री संक्रान्ति पंचदशी	: हिन्दी गद्य-पद्य अनुवाद	1-00
7.	श्रीसिद्ध महामन्त्रमयी शिव प्रार्थना	: हिन्दी अंग्रेज़ी अनुवाद)	

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

8.	श्री मन्दाक्रान्तास्तोत्रम्	: हिन्दी-व्याख्या	5-00
9	श्री आत्मविलास	: सुन्दरी हिन्दी व्याख्या	20-00
10.	श्री सिद्ध महारहस्यम् तथा दशिका दर्शनम्	: हिन्दी टीका	10-00
11.	श्री मद्-अमृतस्तोत्र संग्रह	: हिन्दी टीका	3-00
12.	श्री परम शिवस्तोत्रम् तथा वस्तुस्थिति-प्रकाश	: हिन्दी व्याख्या	12-50
13.	श्री मद्-अमृत सूक्ति पंचाशिका	: संस्कृत व्याख्या	3-00
14.	श्री राष्ट्रालोक	: हिन्दी टीका	1-50
15.	श्री अमृतवाड्मय परिचायिका	:	3-00

पुस्तक प्राप्ति स्थान :

श्री विद्या प्रकाशन
आर. पी. एस.-286,
मदनगिर, नई दिल्ली-62
श्री रत्नलाल अग्रवाल
प्रचार मन्त्री/कोषाध्यक्ष

श्री रत्नलाल अग्रवाल
स्टाफ क्वार्टर ए-I,
दिल्ली हाई कोर्ट, शेरशाह रोड,
नई दिल्ली-3

Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

(देव देवेश्वर)

भगवान् श्री परशुराम

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri